B. A. Part - III
Philosophy Paper - V

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Natural and Moral Evil

ईश्वरवाद के सन्दर्भ में जो समस्याएँ अपनी उग्रता को प्रदर्शित करते हैं, अशुभ की समस्या उनमें प्रमुख है। हमारे दैनिक जीवन का अनुभव इस विश्व के विभिन्न प्रकार के अशुभ तथा बुराई से आच्छादित पाता है। व्यापक दृष्टि से यदि इन अशुभों का वर्गीकरण किया जाए, तो इसके दो रूप नजर आते हैं —

(1) प्राकृतिक अशुभ (Natural Evil)
(2) नैतिक अशुभ (Moral Evil)

ईश्वरवादियों की व्याख्या में प्राकृतिक अशुभ का कारण प्रकृति को तथा नैतिक अशुभ का कारण स्वयं को माना जाता है। इसकी व्याख्या के सन्दर्भ में हम अपना अध्ययन प्रस्तुत करेंगे —

(1) प्राकृतिक अशुभ

जैसा कि नाम से स्पष्ट है प्राकृतिक अशुभ से उन सभी प्रकार के अशुभ का बोध होता है, जिसका कारण प्रकृति के अन्दर घटनेवाली घटनाएँ हैं। इस प्रकार प्राकृतिक अशुभ वे हैं, जो प्रकृति के अन्दर घटित होते हैं। इस सन्दर्भ में पीड़ा, वेदना, मृत्यु इत्यादि को उदाहरण के रूप में रखा जा सकता है। प्राकृतिक अशुभ का क्षेत्र व्यापक है क्योंकि इसके घेरे में, न केवल मनुष्य बल्कि अन्य सभी जीव भी शिकार के रूप में चले आते हैं। वस्तुतः भूकम्प बाढ़, मृत्यु, रोग इत्यादि कष्टदायक प्राकृतिक अशुभ न केवल मनुष्यों को पीड़ित करते हैं, बल्कि इसकी यंत्रणा के शिकार सभी जीव होते हैं।

प्राकृतिक अशुभ को प्रकृति का आवश्यक

तत्व स्वीकार किया गया है न कि आवश्यक। प्रकृति स्वयं उन शक्तियों को जन्म देती है जो प्राकृतिक अशुभ के आधार माने जा सकते हैं। इसे ही दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि प्राकृतिक नियम ही प्राकृतिक अशुभ के कारण होते हैं।

कुछ ईश्वरवादी विचारक प्राकृतिक अशुभ की आवश्यकता को स्पष्ट करने के सन्दर्भ में इसे सफलता का एक आवश्यक तत्व स्वीकार करते हैं। इनका तर्क है कि प्राकृतिक अशुभ के अभाव में विश्व की प्रगति रुक जाएगी। इसलिए एक विचारक ने अपनी टिप्पणी दी है कि अपूर्णता के अभाव में विश्व-रिक्त है, स्थिर है एवं अप्रगतिशील है —

"The world is without imperfection is static, unprogressive and blank."

इस विचारधारा के अनुसार प्राकृतिक अशुभ विश्व में शुभ के उद्भव का मूल कारण है। इसीलिए अशुभों के साम्राज्य के कारण ही कीट्स की लोकप्रिय सूक्ति में यह विश्व "आत्म-निर्माण की घाटी" की भान्यता को प्राप्त करता है। वस्तुतः आत्मा के निर्माण के लिए दुःख संकट की दुनियाँ आवश्यक है। अशुभ नहीं होता तो कठिनाईयों को दूर करने का अवसर नहीं मिलता और तब आदर्श चरित्र का उदय नहीं होता। इसलिए Brightman ने कहा है कि —

"चरित्र का विकास कठिनाईयों के द्वारा ही होता है", क्योंकि इनके अनुसार —

"संवेदना का उद्भव दुःख से होता है"

प्राकृतिक अशुभ की आवश्यकता का प्रतिपादन प्रो० डी० एस० एडवर्ड द्वारा उनकी पुस्तक "The Philosophy of Religion" में प्राप्त निम्न वक्तव्य के आधार पर सुन्दर एवं स्पष्ट ढंग से प्राप्त किया जा सकता है —

"ऐसा स्वर्ग जहाँ कंटकहीन गुलाब ही गुलाब हो, जहाँ दुःखशून्य, निरपेक्ष मधुरता ही मधुरता हो, मानव समुदाय को इतना सारहीन प्रतीत होता है कि वह लम्बी अवधि में शायद ही उसका

Scanned with CamScanner

आनन्दपूर्वक उपभोग कर सके।"

इस तरह विचारकों ने प्राकृतिक अशुभ के औचित्य को सिद्ध करने के सन्दर्भ में प्रेरणादायी स्वीकार किया है।

(ब) नैतिक अशुभ —

प्राकृतिक अशुभ से भिन्न कुछ दूसरे प्रकार के अशुभ भी है। मनुष्य अपने ही कर्मों के कारण अनेक दुःखों का कारण बनता है। उसे उन दुःखों का सामना करना पड़ता है जिसे उसने स्वयं जन्म दिया है। इसे ही दूसरे रूप में स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि मनुष्य के अन्दर संकल्प की स्वतन्त्रता रहती है, जिसके दुरुपयोग के परिणामस्वरूप अशुभ का जन्म होता है। असत्य, हिंसा, चोरी, पाप इत्यादि नैतिक अशुभ के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

प्राकृतिक एवं नैतिक अशुभ का तुलनात्मक अध्ययन -

प्राकृतिक एवं नैतिक अशुभ के परस्पर सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर दो प्रकार के विचार प्राप्त होते हैं —

(i) एक प्रकार के विचार के अनुसार प्राकृतिक अशुभ नैतिक-अशुभ की पृष्ठभूमि को तैयार करते हैं। प्रो० गैलवे प्रभृति विचारक इसी विचार को प्रश्रय प्रदान करते हैं। इस विचारधारा के अनुसार मानव का यह स्वभाविक लक्षण है कि वह अपने संवेगों अभिलाषाओं तथा इच्छाओं की तुष्टि चाहता है लेकिन प्राकृतिक अशुभ रास्ते के रुकावट बनकर आ जाते हैं और इस प्रेरणा में कुछ इस प्रकार के कर्मों को करने के लिए बाध्य किया जाता है जिसे "अनैतिक" की संज्ञा दी जाती है। इन्हीं अनैतिक कार्यों के कारण मनुष्य अनेकानेक बुराइयों का शिकार हो जाता है। यही कारण है कि इस विचार के पोषक प्राकृतिक अशुभ की अपेक्षाकृत प्रारम्भिकता पर बल देता है।

(ii) लेकिन विचार का एक दूसरा पक्ष भी है, जहाँ नैतिक अशुभ की अपेक्षाकृत प्रारम्भिकता पर बल दिया गया है। इस विचार के अनुसार मनुष्य में ईश्वर प्रदत संकल्प की स्वतन्त्रता का उचित रूप में

Scanned with CamScanner

प्रयोग नहीं किया है। ईश्वर को मनुष्य से अपेक्षा थी भी कि वह संकल्प की स्वतन्त्रता का उचित प्रयोग करेगा, लेकिन इस सम्बन्ध में मानव ने उसे निराश किया, जिसके फलस्वरूप ईश्वर का प्राकृतिक अशुभ दण्ड स्वरूप भेजा गया। अतः इस विचार के पोषक के अनुसार प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ के सन्दर्भ में दण्डमात्र है। इस सन्दर्भ में महात्मा गाँधी के निम्न कथन को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। जिसमें उन्होंने कहा था कि प्राकृतिक अशुभ मनुष्य की धूआ-धूत की भावना के कारण है। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया था कि उत्तरी बिहार में 1934 में हुआ भूकम्प इस बात का प्रभाव है कि ईश्वर हमलोगों से असन्तुष्ट है। अतः स्पष्ट है कि प्राकृतिक अशुभ का विकास नैतिक अशुभ के बाद होता है।

लेकिन समीक्षा के धरातल पर यह विचार संगत नहीं दिखायी देता है क्योंकि यदि उपर्युक्त विचार के साथ यह स्वीकार कर लिया जाए कि प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ के लिए दण्ड-स्वरूप है, तो वैसी स्थिति में प्राकृतिक अशुभ से केवल उसी को क्षति पहुँचनी चाहिए, जिन्होंने अपने कर्मों से नैतिक अशुभ को अपनाया। लेकिन अपने सामान्य अनुभव में इसके विपरीत हम पाते हैं कि प्राकृतिक अशुभ के उन व्यक्तियों को भी क्षति पहुँचती है, जो ईमानदार तथा सत्यनिष्ठ है। वस्तुतः ऐसा मानना संगत प्रतीत नहीं होता कि प्राकृतिक अशुभ का विकास नैतिक अशुभ के बाद हुआ है। स्वभावतः गैलवे प्रभृति विचारकों के साथ सहमत होकर यही उचित प्रतीत होता है कि प्राकृतिक अशुभ ही प्रारम्भिक है, यद्यपि कि विश्व में होनेवाले प्रत्येक प्रकार के अशुभों की उपस्थिति निश्चित सत्य एवं साथ ही ईश्वरीय भी परे है।